रजत जयन्ती ग्रन्थमाला-21

सांख्यदर्शन-पर्यालोचन

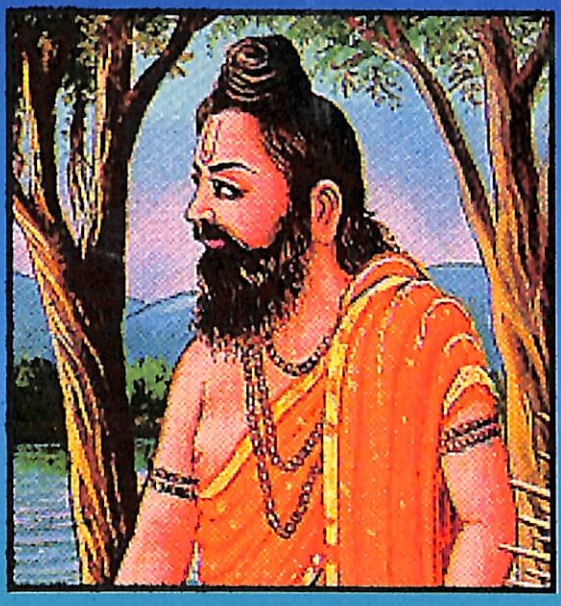

आद्याप्रसाद मिश्र

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

रजत जयन्ती ग्रन्थमाला - २१

सांख्यदर्शन-पर्यालोचन

आद्याप्रसाद मिश्र

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
नई दिल्ली
१९९६

विषय सूची

क्र. सं.	विषय	पृ. सं.
१.	सांख्यदर्शन एवं उसकी प्राचीनता	१
२.	प्राचीन उपनिषदों में सांख्य के मूल तत्त्व	३६
३.	प्राचीन सांख्याचार्य—काल एवं कृतियाँ	७१
४.	मध्यकालीन आचार्य काल एवं कृतियाँ	१११
५.	सांख्यदर्शन की प्रमाण-प्रमेय मीमांसा	१८१
६.	बन्धन तथा उसके कारण	२१५
७.	कैवल्य	२३१
८.	उपसंहार	२४३

तथा-कथित विरोध की मीमांसा करने के अनन्तर ही इस सम्बन्ध में किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है। इसे अगले अध्याय में करेंगे।

पं० एस्० सूर्यनारायण शास्त्री आदि कुछ आधुनिक विचारकों का मत है कि "यद्यपि सांख्य सच्चे अर्थों में बाह्यार्थवादी है, चित् पुरुष के अतिरिक्त अचित् प्रकृति को जड जगत् का कारण मानकर चलता है, और इस प्रकार विज्ञानात्मक ब्रह्माद्वयवाद से भिन्न प्रकृति-पुरुष-द्वैतवाद का अनुयायी है, तथापि इस मत का अन्त या पर्यवसान उस स्थिति में होता है जिसमें जड प्रकृति मुक्त पुरुष के लिए नित्य-परिणामिनी रूप से रह ही नहीं जाती। सांख्य दर्शन का इस स्थिति में पर्यवसान तो उसके विषय में इस मान्यता या कल्पना के साथ अधिक मेल में है, अधिक संगत है कि सांख्य दर्शन में भी उपनिषदों की ऐक्य-दृष्टि की ही प्रकारान्तर से खोज की जा रही थी, न कि उस दृष्टि के विरुद्ध किसी प्रकार का विद्रोह किया जा रहा था[१]।" **शास्त्री** जी ने अपना यह मत **प्रो० गार्बे** के उस मत के विरोध में प्रकट किया है जो **प्रो० गार्बे** ने "सांख्य"[२] नामक अपने एक निबन्ध में प्रकट किया है। वह मत यह है कि सांख्य दर्शन उपनिषदों के प्रज्ञानाद्वैतवाद (Idealistic monism) के विरोध में, उसकी प्रतिक्रिया के रूप में उत्पन्न हुआ। **प्रो० शास्त्री** ने

---

१. द्रष्टव्य, एस्० सूर्यनारायण शास्त्री द्वारा सम्पादित सांख्यकारिका की स्वलिखित भूमिका, पृष्ठ २:—
While it may be truly said that the Sankhya is undoubtedly realistic, in that it starts with the two realities-spirit and matter yet it concludes with a state when matter, as a mutable evolvent does not exist for the reseased spirit, and this conclusion would seem to accord better with the hypothesis that the vision of oneness was being sought after than that it was rebelled against.

२. द्रष्टव्य Encyclopeadia of Religion and Ethics का एकादश भाग, पृष्ठ १८९।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

56-57, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, पंखा रोड,

जनकपुरी, नई दिल्ली-110058